ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय- हिन्दी

दिनांक—06/09/2020 कृतिका(रीढ़ की हड्डी)

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन, सी इ आर टी पर आधारित

रीढ़ की हड्डी

--जगदीश चन्द्र माथुर

(सन् 1917-1978)

गो. प्रसाद- ठीक।....लेकिन, हॉ बेटी, तुमने ,कुछ इनाम-विनाम भी जीते हैं ? (उमा चुप।रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं। लेकिन उमा चुप है उसी तरह गर्दन झुकाए।
~~~~~~~~~~

गोपाल प्रसाद अधीर हो उठते हैं और रामस्वरूप सकपकाते हैं।)

रामस्वरूप-जवाब दो, उमा। (गोपाल प्रसाद से) हँ-हँ, ज़रा शरमाती है, इनाम तो उसने...

गो. प्रसाद-(ज़रा रूखी आवाज़ में) ज़रा इसे भी तो मुँह खोलना चाहिए।

रामस्वरूप-उमा, देखो, आप क्या कह रहे हैं। जवाब दो न।

उमा-(हलकी लेकिन मजबूत आवाज में) क्या जवाब दूँ बाबू जी! जब कुर्सी-मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज़ से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीदार को दिखला देता है। पसंद आ गई तो अच्छा है, वरना...

रामस्वरूप- (चौंककर खड़े हो जाते हैं) उमा, उमा!

उमा-अब मुझे कह लेने दीजिए बाबूजी!...ये जो महाशय मेरे खरीदार बनकर आए हैं, इनसे ज़रा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होता? क्या उनके चोट नहीं

लगती? क्या बेबस भेड़-बकरियाँ हैं, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख-भालकर...?

गो. प्रसाद- (ताव में आकर) बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?

उमा- (तेज आवाज़ में) जी हाँ, और हमारी बेइज्जती नहीं होती जो आप इतनी देर से नाप-तोल कर रहे हैं? और ज़रा अपने इन साहबजादे से पूछिए कि अभी पिछली फरवरी में ये लड़कियों के होस्टल के इर्द-गिर्द क्यों घूम रहे थे, और वहाँ से कैसे भगाए गए थे।

शंकर- बाबू जी, चलिए।

गो. प्रसाद - लड़कियों के होस्टल में?..क्या तुम कालेज में पढ़ी हो?

क्रमशः

छात्र कार्य-दी गई पाठ्य सामग्री का शुद्ध-शुद्ध वाचन करें ।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”